B.A. Part-II
Economics (Hons.)
Paper-II (Public Finance)

Professor (Dr.) Bipin Kumar
Professor, In-charge,
R.R.S. College, Mokama
PPU Patna -

Topic: What is Public Expenditure? Growth of causes of Public Expenditure.

Ans: "सार्वजनिक व्यय" से तात्पर्य उन सभी खर्चों से है जो किसी भी देश की केन्द्रीय, राज्य तथा स्थानीय सरकारें अपने प्रशासन, सामाजिक कल्याण, आर्थिक विकास तथा अन्य देशों की सहायता के लिए करती है अर्थात् "सार्वजनिक व्यय देश के नागरिकों की रक्षा करने अथवा उनके आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण की वृद्धि हेतु किया जाने वाला व्यय है।"

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री प्रो० जे०बी० से ने कहा कि "वित्त की सारी योजनाओं में सर्वोत्तम वह है जिसमें कम व्यय किया जाय।"

वहीं प्रो० एडम स्मिथ के अनुसार, "राज्य का कार्य न्याय, प्रतिरक्षा और कुछ लोक निर्माण कार्यों तक ही सीमित रहना चाहिए।"

'प्रो० फिण्डले शिराज' ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Science of Public Finance' में 'एच. पार्नेल' के अनुसार, "सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने और विदेशी आक्रमण से सुरक्षा के लिए जो सिर्फ कुल आवश्यक व्यय है, यदि इससे अधिक व्यय किया जाता है तो वह बरबादी है एवं अन्यायपूर्ण है और लोगों के ऊपर कष्टप्रद भार है।"

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारण (Factor Responsible for Increase in Public Expenditure):

वर्तमान समय में सार्वजनिक व्यय में होने वाली अप्रत्याशित वृद्धि पर टिप्पणी करते हुए प्रो० फिण्डले शिराज ने लिखा है कि – "बीसवीं शताब्दी में सार्वजनिक व्यय में जिस अंश तक वृद्धि हुई है, यदि यही वृद्धि कुछ वर्षों पूर्व हुई होती तो इसे वित्तीय पागलपन तथा विश्व-सार्वभौम के की आवश्यक निशानी समझा गया होता।"

अब हम सार्वजनिक व्यय में हुए महत्वपूर्ण कारणों की चर्चा करेंगे:

(1) प्रतिरक्षा व्यय में वृद्धि: वर्तमान समय में युद्ध-संचालन का कार्य काफी खर्चीला साबित हो रहा है। शान्तिकाल हो या युद्धकाल आज प्रत्येक राष्ट्र प्रतिरक्षा हेतु हर संभव प्रयास के प्रति सजग है। नवीन अस्त्रों के विकास तथा युद्ध कला की नवीन तकनीकों से युद्ध का खर्च काफी बढ़ता जा रहा है। आज के युग में दुनिया के देशों के बीच आर्थिक एवं राजनीतिक कारणों से परस्पर तनाव एवं टकराव की संभावना बनी रहती है, जिससे प्रत्येक राष्ट्र की सरकारें युद्ध की तैयारी तथा नये-नये हथियारों के आविष्कार तथा आयात पर बड़ी मात्रा में धन खर्च करती है।

(2) राज्य का कल्याणवादी स्वरूप: वर्तमान समय में देश कल्याणकारी राज्यों के रूप में कार्य कर रहे हैं। आज सरकारें शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन, मातृ-शिशु एवं महिला कल्याण, वृद्धावस्था पेन्शन तथा अन्य सुरक्षा एवं जन लोक कल्याणकारी योजनाएँ चलाती

पड़ती है। इसपर सरकार को भारी मात्रा में सार्वजनिक व्यय भी [illegible] करनी पड़ती है।

(3) प्रशासनिक व्ययों में वृद्धि : विश्व के अधिकांश देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था लागू है-- जो सार्वजनिक व्यय का प्रमुख कारण है। इसके तहत संसद, विधान सभाओं, स्थानीय निकायों, कमेटियों, आयोगों, मंत्रियों, सांसदों एवं विधायकों इत्यादि पर काफी मात्रा में खर्च किए जा रहे हैं-- इसमें सरकारी/प्रशासनिक तंत्रों पर भी काफी खर्च बढ़ रहा है-- इसके कारण ही सार्वजनिक व्यय में काफी खर्च बढ़ गया है।

(4) नगरीकरण : देश में बढ़ते नगरीकरण के कारण सरकार को नागरिक मुख्य सुविधाओं सहित सुरक्षा, यातायात, जल, आवास, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य पर काफी खर्च करने की विवशता के कारण खर्च काफी [illegible]

(5) जनसंख्या में वृद्धि : वर्तमान में, विश्व की आबादी काफी बढ़ गयी है, इसके कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रोजगार, भोजन, वस्त्र एवं अन्य आधारभूत सेवाओं पर खर्च अप्रत्याशित रूप से बढ़ा है, जो सार्वजनिक वृद्धि का प्रमुख कारण है।

(6) आर्थिक एवं क्षेत्रीय विषमता को दूर करने का दायित्व : आज लोककल्याणकारी सरकारों को अन्तक्षेत्रीय विषमता को दूर करना तथा समाजवादी समाज की स्थापना हेतु विभिन्न प्रयासों एवं योजनाओं पर व्यय में काफी वृद्धि की जा रही है।

(7) आर्थिक उतार-चढ़ावों के कारण व्यय में वृद्धि : इसके कारण देश की अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता की स्थिति पैदा हो जाती है-- इसके लिए सरकार को नयी नीतियों एवं योजनाओं पर व्यय में काफी वृद्धि करनी पड़ रही है।

(8) आर्थिक सहायता : इसमें विकसित देशों को पिछड़े एवं विकासशील देशों को आर्थिक सहायता, तकनीकी सहायता एवं कभी-2 रक्षा एवं आपदा की स्थिति में मदद करना आवश्यक हो जाता है-- जो सार्वजनिक व्यय में वृद्धि का कारण बना।

(9) आवश्यकताओं की सामूहिक संतुष्टि : इसके तहत सरकार सामूहिक संतुष्टि हेतु योजनाएं यथा, बिजली, पानी, रोड, यातायात सहित अन्य पब्लिक योजनाएं प्रदान करती है।

(10) तकनीकी परिवर्तन : इसके तहत नये-नये वैज्ञानिक आविष्कारों, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, दूरसंचार सहित अन्य परिवर्तनों के कारण व्यय में वृद्धि हुई।

(11) ~~प्रशासन~~ आर्थिक क्षेत्रों में सरकार की सक्रियता :

(12) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक सहित अन्य

(13) सार्वजनिक उपक्रम में वृद्धि :

(14) त्वरित आर्थिक विकास.

(15) अतः उपरोक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक राज्य की गतिविधियों में बढ़ती और व्यापक विस्तार के कारण सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हो रही है।//